中國佛教學院叢書之四

佛教梵文讀本

第一冊

王子農 著

佛教梵文讀本第一册目錄

般若波羅密多心經　1 — 17 頁

廣本般若波羅密多心經譯音本　18 — 19 頁

附錄德人 F. Max Müller 英譯廣本心經　20 — 22 頁

佛說阿彌陀經　23 — 100 頁

117296

अथ प्रज्ञापारमिताहृदयसूत्रं[1]

འཕགས་པ་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པའི་སྙིང་པོའི་མདོ། [2]

般若波羅蜜多心經[3]

(1) F. Max Müller 校刊本見 Anecdota Oxoniensia (Aryan Series) vol. I. Part III

(2). 寺本婉雅校刊本見西藏語文法 (3) 唐智慧輪譯本見大正新修大藏經

॥ नमः सर्वज्ञाय ॥

།བཅོམ་ལྡན་འདས་མ་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ།

एवं मया श्रुतं। एकस्मिन्समये भगवान्राजगृहे विहरति स्म। गृध्रकूटे पर्वते

།།འདི་སྐད་བདག་གིས་ཐོས་པའི་དུས་གཅིག་ན། བཅོམ་ལྡན་འདས་རྒྱལ་པོའི་ཁབ་ན། བྱ་རྒོད་ཕུང་པོའི་རི་ལ་དགེ་སློང་གི་དགེ་འདུན་ཆེན་པོ་དང་།

如是我聞 一時薄誐梵住王舍城 鷲峰山中

महता भिक्षुसंघेन सार्धं महता च बोधिसत्त्वसंघेन[1]। तेन खलु[2] समयेनभगवान्

བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་དགེ་འདུན་ཆེན་པོ་དང་ཐབས་གཅིག་ཏུ་བཞུགས་ཏེ། དེའི་ཚེ་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཟབ་མོ་སྣང་བ་ཞེས"

與大苾芻衆及大菩薩衆俱 爾時世尊入三摩地

(1) गणेन Ⓦ (2) पुनः Ⓦ

(1) बोधनमसमधिं ⓣ गभीरावभासं नाम धर्मपर्यायं भाषित्वा समधिं ⓦ 與藏本合 (2) गंभीरावभासं नाम धर्मपर्यायं व्यवं ⓦ

गंभीरावसं[1]बोधं नाम समाधिं समापन्नः। तेन च समयेनार्यावलोकितेश्वरो बोधि-

བྱ་བའི་ཆོས་ཀྱི་རྣམ་གྲངས་ཀྱི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལ་སྙོམས་པར་ཞུགས་སོ། །ཡང་དེའི་ཚེ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་འཕགས་པ་སྤྱན་

名廣大甚深照見　時衆中有一菩薩摩訶薩名觀世

सत्त्वो महासत्त्वो [2]गंभीरायां प्रज्ञापारमितायां चर्यां चरमाण एवं व्यवलोकयति

རས་གཟིགས་དབང་ཕྱུག་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ཟབ་མོའི་སྤྱོད་པ་ཉིད་ལ་རྣམ་པར་ལྟ་ཞིང་།

音自在　行甚深般若波羅密多行時

स्म। (1)पंच स्कन्धास्तांश्च स्वभावशून्यान्(2) व्यवलोकयति। (3)अथायुष्माञ्छारिपुत्रो

ཕུང་པོ་ལྔ་པོ་དེ་དག་ལ་ཡང་རང་བཞིན་གྱིས་སྟོང་པར་རྣམ་པར་བལྟའོ། །དེ་ནས་སངས་རྒྱས་ཀྱི་མཐུས་ཚེ་དང་ལྡན་པ་ཤཱ་རིའི་

照見五蘊自性皆空　　即時具壽舍利子承

बुद्धानुभावेनार्यावलोकितेश्वरं बोधिसत्वमे(4)तदवोचत्। (5)यः कश्चित्कुलपुत्रो(6)

བུས་ཀྱང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་འཕགས་པ་སྤྱན་རས་གཟིགས་དབང་ཕྱུག་ལ་འདི་སྐད་ཅེས་སྨྲས་སོ། །རིགས་ཀྱི་བུ་གང་ལ་ལ་ཞིག་ཤེས་རབ་ཀྱི

佛威神合掌恭敬白觀世音自在菩薩摩訶薩言　　聖者若有欲學

(1) 自 पंच 至 °कयति Ⓦ本闕　(2) 原作 °श्यां 今據榊譯音本及小本改　(3) अथ खल्वा° Ⓦ　(4) Ⓦ本有 महासत्त्वं 與藏譯合　(5) यत्क Ⓦ　(6) °त्रो वा कुलदुहिता वास्यां ग° Ⓦ

(1) °तायां चर्तुकामस्तेन कथं शिक्षितव्यं (A) (2) यत्किं

गंभीरायां प्रज्ञापारमिता[1]यां चर्यां चर्तुकामः कथं शिक्षितव्यः। एवमुक्त आर्याव-

ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ཟབ་མོའི་སྤྱོད་པ་སྤྱོད་པར་འདོད་པ་དེས་ཇི་ལྟར་བསླབ་པར་བྱ། དེ་སྐད་ཅེས་སྨྲས་པ་དང་། བྱང་ཆུབ་སེམས་

甚深般若波羅密多行者云何修行 如是問已爾時

लोकितेश्वरो बोधिसत्त्वो महासत्त्व आयुष्मंतं शारिपुत्रमेतदवोचत्। [2]यः

དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་འཕགས་པ་སྤྱན་རས་གཟིགས་དབང་ཕྱུག་གིས་ཚེ་དང་ལྡན་པ་ཤཱ་རིའི་བུ་ལ་འདི་སྐད་ཅེས་སྨྲས་སོ། །ཤཱ་རིའི་

觀世音自在菩薩摩訶薩告具壽舍利子言 舍

कश्चिच्छारिपुत्र कुलपुत्रो वा कुलदुहिता वा[1] गंभीरायां प्रज्ञापारमितायां चर्यां[2]

བུ་རིགས་ཀྱི་བུ་འམ་རིགས་ཀྱི་བུ་མོ་གང་ལ་ལ་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ཟབ་མོའི་སྤྱོད་པ་སྤྱོད་པར་འདོད་པ་དེས། འདི་ལྟར་

利子若有善男子善女人 行甚深般若波羅密多行時

चर्तुकामस्तेनैवं[3] व्यवलोकयितव्यं। पंच[4] स्कंधास्तांश्च स्वभावशून्यान्समनुपश्यति

རྣམ་པར་བལྟ་བར་བྱ་སྟེ། ཕུང་པོ་ལྔ་པོ་དེ་དག་ཀྱང་རང་བཞིན་གྱིས་སྟོང་པར་ཡང་དག་པར་རྗེས་སུ་བལྟའོ།

應照見五蘊自性皆空離諸苦厄

(1) वास्यं गंभीरायां Ⓦ (2) Ⓦ 本缺 (3) शिक्षितव्यं यद्दत Ⓦ (4) पंच स्कंधाः स्वभावशून्याः कथं पंच कंधाः स्वभावशून्याः Ⓦ

(1) रूपमेव शून्यता शून्यतैव रूपं। न रूपं पृथक् शून्यतायाः नापि शून्यता पृथग्रूपात् एवं ⑩ (2) च शून्यता ⑩

स्य। (1) रूपं शून्यता शून्यतैव रूपं। रूपान्न पृथक् शून्यता शून्यताया न पृथग्रूपं।

།གཟུགས་སྟོང་པའོ། །སྟོང་པ་ཉིད་ཀྱང་གཟུགས་སོ། །གཟུགས་ལས་ཀྱང་སྟོང་པ་ཉིད་གཞན་མ་ཡིན་ནོ། །སྟོང་པ་ཉིད་ལས་ཀྱང་གཟུགས་གཞན་མ་ཡིན་ནོ།

舍利子　色空　空性見色　色不異空　空不異色

यद्रूपं सा शून्यता या शून्यता तद्रूपं। एवं वेदनासंज्ञासंस्कारविज्ञानानि (2) च शून्यता।

དེ་བཞིན་དུ་ཚོར་བ་དང་། འདུ་ཤེས་དང་། འདུ་བྱེད་དང་། རྣམ་པར་ཤེས་པ་རྣམས་སྟོང་པའོ།

是色即空　是空即色　受想行識亦復如是

एवं शारिपुत्र सर्वधर्माः[1] शून्यतालक्षणा[2] अनुत्पन्ना अनिरुद्धा अमलाविमला

ཤཱ་རིའི་བུ་དེ་ལྟ་བས་ན་ཆོས་ཐམས་ཅད་སྟོང་པ་ཉིད་དེ། མཚན་ཉིད་མེད་པ། མ་སྐྱེས་པ། མ་འགགས་པ། དྲི་མ་མེད་པ། དྲི་མ་དང་བྲལ་བ་མེད་པ།

舍利子是諸法性相空　不生不滅　不垢不淨

अनूना[3] असंपूर्णाः। तस्मात्तर्हि शारिपुत्र शून्यतायां न रूपं न वेदना न संज्ञा

བྲི་བ་མེད་པ། གང་བ་མེད་པའོ། །ཤཱ་རིའི་བུ་དེ་ལྟ་བས་ན། སྟོང་པ་ཉིད་ལ་གཟུགས་མེད། ཚོར་བ་མེད། འདུ་ཤེས་མེད།

不減不增　是故空中無色　無受想行識

(1) स्वभावशू° Ⓜ (2) अजाता अनु° Ⓦ (3) अनोना Ⓙ

(1) न स्प्रष्टव्यं न धर्माः ⑩ न स्प्रष्टव्यं न धर्म ⑦

न संस्कारा न विज्ञानं। न चक्षुर्न श्रोत्रं न घ्राणं न जिह्वा न कायो न मनो

འདུ་བྱེད་མེད། རྣམ་པར་ཤེས་པ་མེད། མིག་མེད། རྣ་བ་མེད། སྣ་མེད། ལྕེ་མེད། ལུས་མེད། ཡིད་མེད།

無眼耳鼻舌身意

न रूपं न शब्दो न गंधो न रसो न (1)स्प्रष्टव्यं न धर्माः। न चक्षुर्धातुर्यावन्न

གཟུགས་མེད། སྒྲ་མེད། དྲི་མེད། རོ་མེད། རེག་བྱ་མེད། ཆོས་མེད་དོ། མིག་གི་ཁམས་མེད་པ་ནས། ཡིད་ཀྱི་

無色聲香味觸法　　無眼界乃至無意

(1) मनोधातुर्न धर्मधातुर्न मनोविज्ञानधातुः। न विद्या नाविद्या न क्षयो यावन्न

ཁམས་མེད། ཡིད་ཀྱི་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ཁམས་ཀྱི་བར་དུ་ཡང་མེད་དོ། མ་རིག་པ་མེད། མ་རིག་པ་ཟད་པ་མེད་པ་ནས།

識界 無無明亦無無明盡乃

जरामरणं न जरामरणक्षयः। न दुःखसमुदयनिरोधमार्गा (2) न ज्ञानं न प्राप्ति-

རྒ་ཤི་མེད། རྒ་ཤི་ཟད་པའི་བར་དུ་ཡང་མེད་དོ། དེ་བཞིན་དུ་སྡུག་བསྔལ་བ་དང་། ཀུན་འབྱུང་བ་དང་། འགོག་པ་དང་། ལམ་མེད། ཡེ་ཤེས་མེད། ཐོབ་པ་མེད།

至無老死亦無老死盡 無苦集滅道 無智證無得

(1) यावन्न मनोधातुर्न धर्मधातुर्न (此二字⑦本無) मनोविज्ञानधातुः ⑰ 於此繁多載全體十八界名字如下： न चक्षुर्धातुर्न रूपधातुर्न चक्षुर्विज्ञान-धातुः। न श्रोत्रधातुर्न शब्दधातुर्न श्रोत्रविज्ञानधातुः। न घ्राणधातुर्न गंधधातुर्न घ्राणविज्ञानधातुः। न जिह्वाधातुर्न रसधातुर्न जिह्वाविज्ञानधातुः। न कायधातुर्न स्प्रष्टव्यधातुर्न कायविज्ञानधातुः। न मनोधातुर्न धर्मधातुर्न मनोविज्ञानधातुः। (2) 自此以下⑦⑰二本相差太多僅存參照

便對照今正文悉從Ⓙ本而附注Ⓦ本之文如下： न रूपं न ज्ञानं न प्राप्तिर्नाप्राप्तिः। तस्मात्तर्हि शारिपुत्र अप्राप्तिताप्राप्तिर्यावन्न-

र्नाप्राप्तिः। तस्माच्छारिपुत्र अप्राप्तित्वेन बोधिसत्वानां प्रज्ञापारमितामाश्रित्य

མ་ཐོབ་པ་ཡང་མེད་དོ། །ཤཱ་རིའི་བུ་དེ་ལྟ་བས་ན། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་ཐོབ་པ་མེད་པའི་ཕྱིར། ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ལ་བརྟེན་ཅིང་

以無所得故菩提薩埵依般若波羅蜜多住

विहरत्यचित्तावरणः। चित्तावरणनास्तित्वादत्रस्तो विपर्यासातिक्रांतो निष्ठ-

གནས་ཏེ། སེམས་ལ་སྒྲིབ་པ་མེད་ཅིང་། སྐྲག་པ་མེད་དེ། ཕྱིན་ཅི་ལོག་པ་ཤིན་ཏུ་འདས་ནས། མྱ་ངན་ལས་འདས་པ་

心無障礙 心無障礙故 無有恐怖遠離顛倒夢想究竟寂

निर्वाणः । त्र्यध्वव्यस्थिता सर्वबुद्धाः प्रज्ञापारमितामाश्रित्यानुत्तरां

ཆེན་པོ་ཞི་མཐར་ཕྱིན་ཏོ། །དུས་གསུམ་དུ་རྣམ་པར་བཞུགས་པའི་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ཀྱང་། ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ལ་བརྟེན་ནས། བླ་ན་མེད་པ

然　　三世諸佛依般若波羅密多故得阿耨多羅三藐三菩提

सम्यक्संबोधिमभिसंबुद्धाः । तस्माज्ज्ञातव्यः प्रज्ञापारमितामहामंत्रो

ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་ཏུ་མངོན་པར་རྫོགས་པར་སངས་རྒྱས་སོ། །དེ་ལྟ་བས་ན་བདེན་པར་ཤེས་པར་བྱས་ཏེ། ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པའི་སྔགས།

現成正覺　　故知般若波羅密多是大真言

त्प्रज्ञापारमितामाश्रित्य विहरंश्चित्तालंबनं नास्तित्वादत्रस्तो विपर्यासातिक्रांतो निष्ठानिर्वाणं प्रभुति । त्र्यध्वव्यवस्थितैरपि सम्यक्संबुद्धैः प्रज्ञापारमितामाश्रित्यानुत्तरा सम्यक्संबोधिः प्राप्ता । एतस्माज्ज्ञातव्यः प्रज्ञापारमितामंत्रो विद्यामंत्रो

ऽनुत्तरो मंत्रः सर्वदुःखप्रशमनो मंत्रः सम्यक्त्वं न मिथ्यात्वं प्रज्ञापारमितायुक्तो मंत्रः। तद्यथा। गते गते पारगते पारसं-

महाविद्यामंत्रोऽनुत्तरमंत्रोऽसमसममंत्रः सर्वदुःखप्रशमनमंत्रः सत्यम-

རིག་པ་ཆེན་པོའི་སྔགས། བླ་ན་མེད་པའི་སྔགས། མི་མཉམ་པ་དང་མཉམ་པའི་སྔགས། སྡུག་བསྔལ་ཐམས་ཅད་རབ་ཏུ་ཞི་བར་བྱེད་པའི་སྔགས། མི་རྫུན་པ་དང་

是大明真言是無上真言是無等等真言能除一切苦　真實不

मिथ्यत्वात् प्रज्ञापारमितायामुक्तो मंत्रः। तद्यथा गते गते पारगते

བདེན་པར་ཤེས་པར་བྱ་སྟེ། ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པའི་སྔགས། སྨྲས་པ། ཏ་དྱ་ཐཱ ཨོཾ་ག་ཏེ་ ག་ཏེ་ པཱ་ར་ག་ཏེ་

虛故說般若波羅蜜多真言　即說真言唵引誐帝誐帝播引囉誐帝

पारसंगते बोधि स्वाहा॥ एवं शारिपुत्र गंभीरायां प्रज्ञापारमितायां

པཱ་ར་སཾ་ག་ཏེ། བོ་དྷི་ སྭཱ་ཧཱ།། །།ཤཱ་རིའི་བུ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོས། དེ་ལྟར་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་

播引囉散誐帝 冒引地娑縛二合賀引 如是舍利子諸菩薩摩訶薩於甚深般若波羅密

चर्यायां शिक्षितव्यं बोधिसत्त्वेन। अथ खलु भगवान् तस्मात्समाधेर्व्युत्थायार्या·

ཟབ་མོ་ལ་བསླབ་པར་བྱའོ། དེ་ནས་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལས་བཞེངས་ཏེ། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སེམས

多行應如是學 爾時世尊從三摩地安詳而起

गते बोधि स्वाहा। ॥ एवंशारिपुत्र बोधिसत्त्वेन महासत्त्वेन प्रज्ञापारमितायां शिक्षितव्यं। अथ खलु भगवांस्तस्यां वेलायां तस्मात्समाधेर्व्युत्थायावलोकितेश्वराय बोधिसत्त्वाय महासत्त्वाय साधुकारमदात्। साधु साधु कुलपुत्र एवमेतत्कुलपुत्र एवमेतत्।

एवमेवैषा प्रज्ञापारमिता यथा त्वया निर्दिष्टानुमोद्यते सर्वतथागतैरर्हद्भिः सम्यक्संबुद्धैः। इदमवोचद्भगवानात्तमना आर्या-

वलोकितेश्वरस्य बोधिसत्वस्य साधुकारमदात्। साधु साधु कुलपुत्र एवमे-

དཔའ་ཆེན་པོ་འཕགས་པ་སྤྱན་རས་གཟིགས་དབང་ཕྱུག་ལ་ལེགས་སོ། ཞེས་བྱ་བ་བྱིན་ནས། ལེགས་སོ་ལེགས་སོ། རིགས་ཀྱི་བུ་དེ་དེ་བཞིན་ནོ།

讚觀世音自在菩薩摩訶薩言 善哉 善哉 善男子 如是

तत्कुलपुत्र। एवमेतद्गंभीरायां प्रज्ञापारमितायां चर्यं चर्तव्यं यथा त्वया

དེ་དེ་བཞིན་ནོ། ཇི་ལྟར་ཁྱོད་ཀྱིས་བསྟན་པ་དེ་བཞིན་དུ། ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ཟབ་མོ་ལ་སྤྱད་པར་བྱ་སྟེ། དེ་བཞིན་……

如是 如汝所說甚深般若波羅蜜多行應如是行 如是行時

निर्दिष्टमनुमोद्यते तथागतैरर्हद्भिः[1]। इदमवोचद्भगवानानंदमना आयुष्माञ्छा

གཤེགས་པ་རྣམས་ཀྱང་རྗེས་སུ་ཡི་རང་ངོ། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་དེ་སྐད་ཅེས་བཀའ་སྩལ་ནས། ཚེ་དང་ལྡན་པ་ཤཱ་རིའི་

一切如來悉皆隨喜 爾時世尊如是說已 具壽舍利

रिपुत्र आर्यावलोकितेश्वरश्च बोधिसत्वः सा च सर्वावती पर्षत्सदेव-

བུ་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་འཕགས་པ་སྤྱན་རས་གཟིགས་དབང་ཕྱུག་དང་། ཐམས་ཅད་དང་ལྡན་པའི་འཁོར་དེ་དག་དང་། ལྷ་དང་།

子 觀世音自在菩薩 及彼衆會一切世間天人

(1) अनुमोच तथागते कृतिः ③

वलोकितेश्वरो बोधिसत्वो महासत्वस्ते च भिक्षवस्ते च बोधिसत्वा महासत्वाः स च सर्वावती पर्षत्सदेवमानुषासुरगरु-

मानुषासुरगंधर्वश्च लोको भगवतो भाषितमभ्यनंदन् ॥

མི་དང་། ལྷ་མ་ཡིན་དང་། དྲི་ཟར་བཅས་པའི་འཇིག་རྟེན་ཡི་རངས་ཏེ། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་བཀའ་སྩལ་པ་ལ་མངོན་པར་བསྟོད་དོ། །

阿蘇囉 巘馱嚩等聞佛所說皆大歡喜信受奉行

॥ इति प्रज्ञापारमिताहृदयसूत्रं समाप्तं ॥

། །བཅོམ་ལྡན་འདས་མ་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པའི་སྙིང་པོ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་མདོ་རྫོགས་སོ། །

般若波羅蜜多心經終

廣本般若波羅蜜多心經 譯音本

Namaḥ sarvajñāya.

Evaṁ mayā śrutam. ekasmin samaye Bhagavān Rāja-gṛhe viharati sma Gṛdhra-kūṭe parvate mahatā bhikṣu-saṁghena sārdhaṁ mahatā ca bodhisattva-saṁghena. Tena khalu samayena Bhagavān gaṁbhīrāvasaṁbodhaṁ nāma samāpannaḥ. Tena ca samayenāryāvalokiteśvaro bodhisattvo mahā-sattvo gaṁbhīrāyāṁ prajñāpāramitāyāṁ caryāṁ caramāṇa evaṁ vyavalokayati sma. Pañca skandhāḥ. tāṁśca svabhāva-śūnyān vyavalokayati. Athāyuṣmāñchāriputra buddhānubhāvenāryāvalokiteśvaraṁ bodhisattvaṁ etad avocat yaḥ kaścit kulaputro gaṁbhīrāyāṁ prajñā-pāramitāyāṁ caryāṁ cartu-kāmaḥ kathaṁ śikṣitavyaḥ. Evam ukta āryāvalokiteśvaro bodhisattvo mahā-sattva āyuṣmantaṁ Śāriputram etad avocat. yaḥ kaścicchāriputra kulaputra vā kula duhitā vā gaṁbhīrāyāṁ prajñā-pāramitāyāṁ caryāṁ cartukāmas tenaivaṁ vyavalokitavyaṁ. Pañca skandhāḥ tāṁśca svabhāva-śūnyān samanupaśyati sma. rūpaṁ śūnyatā śūnyataiva rūpaṁ. rūpān na pṛthak śūnyatā śūnyatāyā na pṛthag rūpaṁ. yad rūpaṁ sā śūnyatā yā śūnyatā tad rūpam. Evaṁ vedanā-saṁjñā-saṁskāra-vijñānāni ca śūnyatā. Evaṁ Śāriputra sarva-dharmaḥ śūnyatā-lakṣaṇā anutpannā aniruddhā amalāvimalā anūnā asaṁpūrṇāḥ. Tasmāt tarhi Śāriputra śūnyatāyāṁ na rūpaṁ na vedanā na saṁjñā na saṁskārā na vijñānam. na cakṣur na-

śrotraṁ na ghrāṇaṁ na jihvā na kāyo na mano na rūpaṁ na śabdo na gandho na raso na spraṣṭavyaṁ na dharmāḥ. Na cakṣurdhātur yāvan na manodhātur na dharma-dhātur na manovijñāna-dhātuḥ. na vidyā nāvidyā na kṣayo yāvan na jarāmaraṇaṁ na jarāmaraṇa-kṣayaḥ. na duḥkha-samudaya-nirodha-mārgā na jñānaṁ na prāptiḥ. Tasmāc Chāriputra a-prāptitvena bodhisattvānāṁ prajñā-pāramitām āśritya viharaty acittāvaraṇaḥ. cittāvaraṇa-nāstitvād atrasto viparyāsātikrānto niṣṭha nirvāṇaḥ. Tryadhvavyavasthitā sarva-buddhāḥ prajñāpāramitām āśrityānuttarāṁ samyaksambodhim abhisaṁbuddhāḥ. Tasmaj jñātavyaḥ prajñā-pāramitā mahā-mantro mahā-vidyāmantro 'nuttara-mantro 'samasama-mantraḥ sarva-duḥkha-praśamana-mantraḥ satyam amithyatvāt prajñā-pāramitāyām ukto mantraḥ. Tadyathā Gate gate pāragate pārasaṁgate bodhi svāhā. Evaṁ Śāriputra gambhīrāyāṁ prajñā-pāramitāyāṁ caryāyāṁ śikṣitavyaṁ bodhisattvena. Atha khalo Bhagavān tasmāt samādher vyutthāyāvalokiteśvarasya bodhisattvasya sādhu-kāram adāt. Sādhu sādhu kulaputra evam etat kula-putra. Evam etad gambhīrāyāṁ prajñā-pāramitāyāṁ caryāṁ cartavyaṁ yathā tvayā nirdiṣṭam anumodyate tathāgatair 'rhadbhiḥ. Idam avocad Bhagavān ānandamāna āyuṣmāñ Chāriputra āryāvalokiteśvaraśca bodhisattvaḥ sā ca sarvavatī parṣat sa-deva-mānuṣāsura-gandharvaśca loko bhagavato bhāṣitam abhyanandan.

Iti prajñā-pāramitā-hṛdaya-sūtram samāptam.

附錄 德人 F. Max Müller 英譯廣本心經.　　見 Buddhist Mahāyāna Texts. (SBE.49)

Adoration to the Omniscient!　　Thus I heard. At one time the Bhagavat dwelt at Rājagṛha, on the hill Gṛdhrakūta, together with a large number of Bhikṣus and a large number of Bodhisattvas.

At that time the Bhagavat was absorbed in a meditation, called Gambhīrāvasambodha. And at the same time, the great Bodhisattva Āryāvalokiteśvara, performing his study in the deep prajñāpāramitā, thought thus: 'there are the five skandhas, and those he considered as something by their nature empty.'

Then the venerable Śāriputra, through Buddha's power, thus spoke to the Bodhisattva Āryāvalokiteśvara: "If the son or daughter of a family wishes to perform the study in the deep prajñāpāramitā, how is he to be taught?"

On this the great Bodhisattva Āryāvalokiteśvara thus spoke to the venerable Śāriputra: "If the son or daughter of a family wish to perform the study in the deep prajñāpāramitā, he must think thus:

There are five skandhas, and these he considered as by their nature empty. Form is emptiness, and emptiness indeed is form. Emptiness is not different from form, form is not different from emptiness. What is form that is emptiness, what is emptiness that is form. Thus perception, name, conceptions, and

knowledge also are emptiness. Thus, O Sāriputra all things have the character of emptiness, they have no beginning, no end, they are faultless and not faultless, they are not imperfect and not perfect. Therefore, O Sāriputra, here in this emptiness, there is no form, no perception, no name, no concepts, no knowledge. No eye, ear, nose, tongue, body, and mind. No form, sound, smell, taste, touch, and objects. There is no eye, etc., till we come to there is no mind no objects, no mind-knowledge. There is no knowledge, no ignorance, no destruction of ignorance, till we come to there is no decay and death, no destruction of decay and death; there are not (the four truth, viz.) that there is pain, origin of pain, stoppage of pain, and the path to it. There is no knowledge, no obtaining, no not obtaining of Nirvāṇa. Therefore, O Sāriputra, as there is no obtaining (of Nirvāṇa), a man who has approached the prajñāpāramita of the Bodhisattvas, dwells (for a time) enveloped in consciousness, But when the envelopment of consciousness has been annihilated, then he becomes free of all fear, beyond the reach of change, enjoying final Nirvāṇa.

All Buddhas of the past, present, and future, after approaching the prajñāpāramita, have awoke to the highest perfect knowledge.

Therefore we ought to know the great verse of the prajñāpāramitā, the verse of the great wisdom, the unsurpassed verse, the verse which appeases all pain — it is truth, because it is not false — the verse proclaimed in the prajñāpāramitā: 'O wisdom, Gone, Gone, Gone to the other shore, landed at the other shore, svahā!" .

Thus, O Śāriputra, should a Bodhisattva teach in the study of the deep prajñāpāramitā.

Then when the Bhagavat had risen from that meditation, he gave his approval to the venerable Bodhisattva Avalokiteśvara, saying: 'well done, well done, noble son! So it is, noble son. So indeed must this study of the deep prajñāpāramitā be performed, As it has been described by thee, it is applauded by Arhat Tathāgatas." Thus spoke Bhagavat with joyful mind. And the venerable Śāriputra, and the honourable Bodhisattva Avalokiteśvara, and the whole assembly, and the world of gods, men, demons, and fairies praised the speach of the Bhagavat.

Here ends the prajñāpāramitā hṛdaya sūtra.

॥ सुखावतीव्यूह ॥

॥ འཕགས་པ་བདེ་བ་ཅན་གྱི་བཀོད་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་མདོ ॥

佛說阿彌陀經

॥ नमः सर्वज्ञाय ॥

॥ སངས་རྒྱས་དང་། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཐམས་ཅད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ ॥

एवं मया श्रुतं । एकस्मिन्समये भगवाञ्श्रावस्त्यां विहरति स्म जेतवने

འདི་སྐད་བདག་གིས་ཐོས་པ་དུས་གཅིག་ན། བཅོམ་ལྡན་འདས་མཉན་ཡོད་ན། རྒྱལ་བུ་རྒྱལ་བྱེད་ཀྱི་ཚལ་མགོན་མེད་ཟས་སྦྱིན་གྱི་ཀུན་

如是我聞　一時佛在舍衛國祇樹給孤獨園

ऽनाथपिंडदस्यारामे महता भिक्षुसंघेन सार्धमर्धत्रयोदशभिर्भिक्षुशतैरभि-

དགའ་ར་བ་ན། དགེ་སློང་སྟོང་ཉིས་བརྒྱ་ལྔ་བཅུའི་དགེ་སློང་གི་དགེ་འདུན་ཆེན་པོ་གནས་བརྟན་ཅན་ཤེས་ཆེན་པོ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཁ་

與大比丘僧千二百五十人俱　皆

㊀摩訶劫賓那五字原在迦留陀夷之後 今順梵本移置於此

ज्ञानाभिज्ञातैः स्थविरैर्महाश्रावकैः सर्वैरर्हद्भिः । तद्यथा स्थविरेण च

གྲགས་པ་ལ་འདི་ལྟ་སྟེ། གནས་བརྟན་ཤཱ་རིའི་བུ་དང་། མོའུ་དྒལ་གྱི་བུ་ཆེན་པོ་དང་། འོད་སྲུང་ཆེན་པོ་དང་། ཀཱ་ཕྱི་ཎ་

是大阿羅漢衆所知識　　　　長老舍利弗

शारिपुत्रेण महामौद्गल्यायनेन च महाकाश्यपेन च महाकप्फिणेन च

ཆེན་པོ་དང་། ཀཱ་ཡེ་ན་ཆེན་པོ་དང་། གསུས་པོ་ཆེན་པོ་དང་། ནམ་གྲུ་དང་། ལམ་ཕྲན་བསྟན་དང་། དགའ་བོ་

摩訶目犍連　　摩訶迦葉　　摩訶劫賓那㊀

महाकात्यायनेन च महाकौष्ठिलेन च रेवतेन च शुद्धिपंथकेन च नंदेन चा-

དང་། ཀུན་དགའ་བོ་དང་། །སྒྲ་གཅན་ཟིན་དང་། བ་ལང་བདག་དང་། བྷ་ར་དྭ་ཛ་དང་། འཆར་བྱེད་དག

摩訶迦旃延　摩訶俱絺羅　離婆多　周利槃陀伽　難陀　阿

नंदेन च राहुलेन च गवांपतिना च भरद्वाजेन च कालोदयिना च वक्कुलेन

པོ་དང་། བཀུ་ལ་དང་། མ་འགགས་པ་དང་། དེ་དག་དང་ཉན་ཐོས་ཆེན་པོ་གཞན་དག་དང་། བྱང་ཆུབ་སེམས

難陀　羅睺羅　憍梵波提　賓頭盧頗羅　迦留陀夷　薄拘羅

चानिरुद्धेन च । एतैश्चान्यैश्च संबहुलैर्महाश्रावकैः संबहुलैश्च बोधिसत्त्वै-

དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་མང་པོ་ལ། འདི་ལྟ་སྟེ། འཇམ་དཔལ་གཞོན་ནུར་གྱུར་པ་དང་། བྱང་ཆུབ་སེམས་

阿㝹樓馱　如是等諸大弟子　并諸菩薩摩訶薩

महासत्त्वैः । तद्यथा मंजुश्रिया च कुमारभूतेनाजितेन च बोधिसत्त्वेन

དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་མི་ཕམ་པ་དང་། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་སྤོས་ཀྱི་གླང་པོ་དང་། བྱང

文殊師利法王子　阿逸多菩薩

गंधहस्तिना च बोधिसत्वेन नित्योद्युक्तेन च बोधिसत्वेनानिक्षिप्तधुरेण

ཆུབ་སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་རྟག་ཏུ་བརྩོན་དང་། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་བརྩོན་པ་མི་…

乾陀訶提菩薩　　常精進菩薩

च बोधिसत्वेन। एतैश्चान्यैश्च संबहुलैर्बोधिसत्वैर्महासत्वैः। शक्रेण च देवा-

འདོར་བ་དང་། དེ་དག་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་གཞན་མང་པོ་དག་དང་། ལྷའི་དབང་པོ་བརྒྱ་བྱིན་དང་།

與如是等諸大菩薩　　及釋提桓因等

नामिंद्रेण ब्रह्मणा च सहापतिना। एतैश्चान्यैश्च सबहुलैर्देवपुत्रनयुत

མི་མཇེད་ཀྱི་བདག་པོ་ཚངས་པ་དང་། དེ་དག་དང་། ལྷའི་བུ་ཁྲག་ཁྲིག་འབུམ་ཕྲག་མང་པོ་གཞན་དག་དང་ཡང་ཐབས་ཅིག་ཏུ

無量諸天大衆俱

शतसहस्रैः ॥ १ ॥

བཞུགས་སོ།

तत्र खलु भगवानायुष्मंतं शारिपुत्रमामंत्रयति स्म। अस्ति शारिपुत्र

དེ་ནས་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་ཚེ་དང་ལྡན་པ་ཤཱ་རིའི་བུ་ལ་བཀའ་སྩལ་པ། ཤཱ་རིའི་བུ་སངས་རྒྱས་ཀྱི

爾時佛告長老舍利弗 從是西方過

पश्चिमे दिग्भाग. इतो बुद्धक्षेत्रं कोटिशतसहस्रं बुद्धक्षेत्राणामतिक्रम्य

ཞིང་འདི་ནས་ནུབ་ཕྱོགས་ལོགས་སུ་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཞིང་བྱེ་བ་ཕྲག་ཁྲིག་འབུམ་འདས་པ་ན་འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་

十萬億佛土

सुखावती नाम लोकधातुः। तत्रामितायुर्नाम तथागतोऽर्हन्सम्यक्

བདེ་བ་ཅན་ཞེས་བྱ་བ་ཡོད་དོ༎ དེ་ན་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་

有世界名曰極樂　　其土有佛號阿彌陀

सम्बुद्ध एतर्हि तिष्ठति ध्रियते यापयति धर्मं च देशयति। तत्किं

པའི་སངས་རྒྱས་ཚེ་དཔག་མེད་ཅེས་བྱ་བ་བཞུགས་ཏེ་འཚོ་ཞིང་གཞེས་ལ་ཆོས་ཀྱང་སྟོན་ཏོ། ཤཱ་རིའི་བུ

今現在彼說法　　舍利

मन्यसे शारिपुत्र केन कारणेन सा लोकधातुः सुखावतीत्युच्यते ।

འདི་ཇི་སྙམ་དུ་སེམས། འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་དེ་ཅིའི་ཕྱིར་བདེ་བ་ཅན་ཞེས་བྱ་ཞེ་ན།

弗彼土何故名為極樂

तत्र खलु पुनः शारिपुत्र सुखावत्या लोकधातौ नास्ति सत्वानां काय-

ཤཱ་རིའི་བུ་འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་བདེ་བ་ཅན་དེ་ན་སེམས་ཅན་རྣམས་ཀྱི་ལུས་ལ་སྡུག་བསྔལ་མེད། སེམས་ལ་

其國衆生 無有衆苦

दुःख न चित्तदुःख अप्रमाणान्येव सुखकारणानि। तेन कारणेन सा

སྡུག་བསྔལ་མེད་ཅིང་བདེ་བའི་རྒྱུ་ཚད་མེད་པར་ཡོད་དེ། དེའི་ཕྱིར་འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས

但受諸樂 故名極樂

लोकधातुः सुखावतीत्युच्यते ॥२॥

བདེ་བ་ཅན་ཞེས་བྱའོ ||

पुनरपर शारिपुत्र सुखावती लोकधातुः सप्तभिर्वेदिकाभिः सप्तभिस

ཤཱ་རིའི་བུ་གཞན་ཡང་འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་བདེ་བ་ཅན་དེ་ན་ལྕགས་རི་རིམ་པ་བདུན་དང་། ཤིང་ཏ་ལའི་ཕྲེང་བ་རིམ་པ་བདུན་དང་།

又舍利弗　極樂國土　七重欄楯 七重羅網七

तालपंक्तिभिः किंकिणीजालैश्च समलंकृता समंततो ऽनुपरिक्षिप्ता चित्रा

དྲིལ་བུ་གཡེར་ཁའི་དྲ་བ་རྣམས་ཀྱིས་ཀུན་ནས་ཡོངས་སུ་བསྐོར་བ། བཀྲ་བ་བལྟ་ན་སྡུག་པའོ།། ཤཱ་རིའི་བུ་སངས་རྒྱས་ཀྱི

重行樹 皆是四寶 周帀圍繞

दर्शनीया चतुर्णां रत्नानां । तद्यथा सुवर्णस्य रूप्यस्य वैडूर्यस्य स्फटिक-

ཞིང་དེ་ནི་རིན་པོ་ཆེ་སྣ་བཞིས་བརྒྱན་ཅིང་བལྟ་ན་སྡུག་སྟེ། གསེར་དང་། དངུལ་དང་། བཻ་ཌཱུརྱ་དང་། ཤེལ་དང་རྣམ་པ་དེ་ལྟ་བུའི་སངས་

स्य । एवंरूपैः शारिपुत्र बुद्धक्षेत्रगुणव्यूहैः समलंकृतं तद्बुद्धक्षेत्रं ॥ ३ ॥

རྒྱས་ཀྱི་ཞིང་གི་ཡོན་ཏན་བཀོད་པ་དག་གིས་ལེགས་པར་བརྒྱན་པའོ།

是故彼國名為極樂

पुनरपरं शारिपुत्र सुखावत्यां लोकधातौ सप्तरत्नमय्यः पुष्करिण्यः।

ཤཱ་རིའི་བུ་གཞན་ཡང་འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་བདེ་བ་ཅན་ན་རིན་པོ་ཆེ་སྣ་བདུན་གྱི་རྫིང་

又舍利弗極樂國土有七寶池

तद्यथा सुवर्णस्य रूप्यस्य वैडूर्यस्य स्फटिकस्य लोहितमुक्तास्याश्म-

गर्भस्य मुसारगल्वस्य सप्तमस्य रत्नस्य । अष्टांगोपेतवारिपरिपूर्णाः संमती-

ཡན་ལག་བརྒྱད་དང་ལྡན་པའི་ཆུས་ཡོངས་སུ་གང

八功德水充滿其中池底

र्थकाः काकपेया सुवर्णवालुकासंस्तृताः । तासु च पुष्करिणीषु समंता-

མ། རིན་པོ་ཆེའི་ཕྲ་མ་ལེབས་པ། བྱེ་རོག་གིས་བཏང་དུ་རུང་བར་ཁ་ད་ཅད་དུ་གྱུར་བ། གསེར་གྱི་བྱེ་མ་ཐང་ལ་བདལ་ཡོད་དེ།

純以金沙布地　　四邊階道金銀瑠璃玻

श्चतुर्दिशं चत्वारि सोपानानि चित्राणि दर्शनीयानि चतुर्णां रत्नानां।

ཁྱེར་དེ་དག་གི་ཕྱོགས་བཞི་ཀུན་ན་ཐེམ་སྐས་བཀྲ་བ་བལྟ་ན་སྡུག་པ། གསེར་དང་། དངུལ་དང་། བཻ་ཌཱུ་རྱ་དང་། ཤེལ་དང་།

瑞合成

तद्यथा सुवर्णस्य रूप्यस्य वैडूर्यस्य स्फटिकस्य। तासां च पुष्करि-

རིན་པོ་ཆེ་སྣ་བཞི་ལས་གྲུབ་པ་བཞི་བཞི་ཡོད་དེ། ཁྱེར་དེ་དག་གི་འགྲམ་ན་

上有楼閣亦以

णीनां समंताद्रत्नवृक्षा जाताश्चित्रा दर्शनीया सप्ताना रत्नाना ।

རིན་པོ་ཆེའི་ཤིང་ལྗོན་པ་རིན་པོ་ཆེ་སྣ་བདུན་ལ་འདི་ལྟ་སྟེ། གསེར་དང་། དངུལ་དང་། བཻ་ཌཱུ་རྱ་དང་།

金銀瑠璃玻瓈硨磲赤珠瑪瑙而嚴飾之

तद्यथा सुवर्णस्य रूप्यस्य वैडूर्यस्य स्फटिकस्य लोहितमुक्तस्याश्म-

ཤེལ་དང་། མུ་ཏིག་དམར་པོ་དང་། རྡོའི་སྙིང་པོ་དང་། སྤུག་གི་ཤིང་རྣམ་པ་བདུན་ནི་སྤུག་པ་དག་སྐྱེས་པ་སོ།

गर्भस्य मुसारगल्वस्य सप्तमस्य रत्नस्य । तासु च पुष्करिणीषु सन्ति

རྫིང་དེ་དག་ཀུན་ནས་པདྨ་སྐྱེས་པ་འདི་

池中蓮華 大如車輪

पद्मानि जातानि नीलानि नीलवर्णानि नीलनिर्भासानि नीलनि-

ཡུ་སྐྱེ། གསེར་གྱི་ཁ་དོག །གསེར་གྱི་འོད་འབྱུང་བ། གསེར་ལྟ་བུར་སྣང་བ། སྔོན་པོ། ཁ་དོག་སྔོན་པོ། འོད་

青色青光

दर्शनानि। पीतानि पीतवर्णानि पीतनिर्भासानि पीतनिदर्शनानि।

སྔོན་པོ་འབྱུང་བ། སྔོན་པོ་ལྟ་བུར་སྟོན་པ། སེར་པོ། ཁ་དོག་སེར་པོ། འོད་སེར་པོ་འབྱུང་བ། སེར་པོ

黄色黄光

लोहितानि लोहितवर्णानि लोहितनिर्भासानि लोहितनिदर्शनानि

ལྟ་བུར་སྟོན་པ། དམར་པོ། ཁ་དོག་དམར་པོ། འོད་དམར་པོ་འབྱུང་བ། དམར་པོ་ལྟ་བུར་སྣང་བ།

赤色赤光

अवदातान्यवदातवर्णान्यवदातनिर्भासान्यवदातनिदर्शनानि । चित्राणि चित्र-

དཀར་པོ། ཁ་དོག་དཀར་པོ། འོད་དཀར་པོ་འབྱུང་བ། དཀར་པོ་ལྟ་བུར་སྟོན་པ། བཀྲ་བ། ཁ་དོག་བཀྲ་

白色白光 微妙香潔

वर्णानि चित्रनिर्भासानि चित्रनिदर्शनानि शकटचक्रप्रमाणपरिणाहानि ।

བ། འོད་བཀྲ་བ་འབྱུང་བ། བཀྲ་བ་ལྟ་བུར་སྟོན་པ། ཤིང་རྟའི་འཕང་ལོ་ཙམ་དག་སྐྱེས་སོ། །ཤཱ་རིའི་བུ

एवंरूपैः शारिपुत्र बुद्धक्षेत्रगुणव्यूहैः समलंकृतं तद्बुद्धक्षेत्रं ॥ ४ ॥

སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཞིང་དེ་ནི་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཞིང་གི་ཡོན་ཏན་བཀོད་པ་རྣམ་པ་དེ་ལྟ་བུ་དག་གིས་ལེགས་པར་བརྒྱན་པའོ།

舍利弗極樂國土成就如是功德莊嚴

पुनरपरं शारिपुत्र तत्र बुद्धक्षेत्रे नित्यप्रवादितानि दिव्यानि तू-

ཤཱ་རིའི་བུ་གཞན་ཡང་འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་བདེ་བ་ཅན་ན་ལྷའི་སིལ་སྙན་གྱི་སྒྲ་རྟག་ཏུ་འབྱུང་ངོ་། །ས་ཆེན་པོ་ནི་གསེར་གྱི་ཁ་དོག་ལྡན་ལ་སྣང་སྟེ། ཉམས་དགའ་

又舍利弗彼佛國土　　常作天樂

र्याभि सुवर्णवर्णा च महापृथिवी रमणीया। तत्र च बुद्धक्षेत्रे त्रि-

བའོ།། ཤཱ་རིའི་བུ་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཞིང་དེ་ནི་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཞིང་གི་ཡོན་ཏན་བཀོད་པ་རྣམ་པ་དེ་ལྟ་བུ་དག་གིས་ལེགས་པར་བརྒྱན་པའོ།། ཤཱ་རིའི་བུ་གཞན་ཡང་

黃金為地　　　　　　　　　　晝夜六時

ष्कृत्वो रात्रौ त्रिष्कृत्वो दिवसस्य पुष्पवर्षं प्रवर्षति दिव्यानां

སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཞིང་དེ་ན་ཉིན་ལན་གསུམ། མཚན་ལན་གསུམ་དུ་ལྷའི་མེ་ཏོག་མནྡཱ་ར་བའི་ལྷའི་མེ་ཏོག་གི་ཆར་འབབ་བོ།།

雨天曼陀羅華

मांदारवपुष्पाणां । तत्र ये सत्वा उपपन्नास्त एकेन पुरोभक्तेन

དེར་སེམས་ཅན་གང་དག་སྐྱེས་པ་དེ་དག་ཀུང་སྔ་དྲོ་གཅིག་བཞིན་དུ་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཞིང་

其土眾生 常以清旦各以衣

कोटिशतसहस्रं बुद्धानां वंदंत्यन्याँल्लोकधातून्गत्वा । एकैकं च

གཞན་དང་གཞན་དུ་སོང་སྟེ་སངས་རྒྱས་བྱེ་བ་ཕྲག་འབུམ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ཞིང་། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་རེ་རེ་ལའང་མེ་ཏོག་གི

裓盛眾妙華供養他方十萬億佛

तथागतं कोटिशतसहस्राभिः पुष्पवृष्टिभिरभ्यवकीर्य पुनरपि

ཆར་སྟེ་བ་ཕྱག་འབུམ་མཆོད་པར་འགྲོད་ཏོ། བཅོད་ནས་ཉིན་མོ་གནས་པའི་ཕྱིར་སླར་འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་དེ་

即以食時

तामेव लोकधातुमागच्छति दिवाविहाराय। एवंरूपैः शारिपुत्र

ཉིད་དུ་འདོང་ངོ་།།

ཤཱ་རིའི་བུ་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཞིང་དེ་ནི་

還到本國飯食經行

舍利弗 極樂國

बुद्धक्षेत्रगुणव्यूहैः समलंकृतं तद्बुद्धक्षेत्रं ॥ ५ ॥

སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཞིང་གི་ཡོན་ཏན་བཀོད་པ་རྣམ་པ་དེ་ལྟ་བུ་དག་གིས་ལེགས་པར་བརྒྱན་པའོ།།

土成就如是功德莊嚴

पुनरपरं शारिपुत्र तत्र बुद्धक्षेत्रे संति हंसाः क्रौंचा मयूराश्च । ते

ཤཱ་རིའི་བུ་གཞན་ཡང་འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་བདེ་བ་ཅན་ན་ངང་པ་དང་། ཁྲུང་ཁྲུང་དང་། རྨ་བྱ་དག་ཡོད་ལ་དེ་དག་ཀུན་

復次舍利弗彼國常有種種奇妙雜色之鳥白鶴孔雀鸚鵡舍利迦

त्रिष्कृत्वो रात्रौ त्रिष्कृत्वो दिवसस्य संनिपत्य संगीतिं कुर्वंति स्म

ཉིན་ལན་གསུམ། མཚན་ལན་གསུམ་འདུས་ནས་ཡང་དག་པར་བསྒོ་བར་བྱེད་དེ།

陵頻伽共命之鳥是諸衆鳥晝夜六時出和雅音

स्वकस्वकानि च रुतानि प्रव्याहरंति। तेषां प्रव्याहरतामिंद्रियबल-

རང་རང་གི་སྐད་དག་གིས་སྨྲའོ༎

དེ་དག་སྨྲ་བ་ན་དབང་པོ་དང་སྟོབས་དང་། བྱང་"

其音演暢五根五力七菩提

① བཀོད་པ། T.莊嚴 རྣམ་པ

बोध्यंगशब्दो निश्चरति । तत्र तेषां मनुष्याणां तं शब्दं श्रुत्वा

ཆུབ་ཀྱི་ཡན་ལག་གི་སྒྲ་དག་འབྱུང་ངོ་།། སེམས་ཅན་གང་དག་དེར་སྐྱེས་པ་དེ་དག་གིས་སྒྲ་དེ་ཐོས་ནས་

分八聖道分如是等法　其土眾生聞是音已皆悉念佛念法念

बुद्धमनसिकार उत्पद्यते धर्ममनसिकार उत्पद्यते संघमनसिकार

སངས་རྒྱས་ཡིད་ལ་བྱེད་པ་སྐྱེ། ཆོས་ཡིད་ལ་བྱེད་པ་སྐྱེ། དགེ་འདུན་ཡིད་ལ་བྱེད་

僧

उत्पद्यते ॥ तत्किं मन्यसे शारिपुत्र तिर्यग्योनिगतास्ते सत्त्वाः । न

པ་སྐྱེའོ། ། ཤཱ་རིའི་བུ་འདི་ཇི་སྙམ་དུ་སེམས། སེམས་ཅན་དེ་དག་དུད་འགྲོའི་སྐྱེ་གནས་སུ་གྱུར་པ་ཡིན་སྙམ་དུ།

舍利弗汝勿謂此鳥實是罪報所生

पुनरेवं द्रष्टव्यं । तत्कस्माद्धेतोः । नामापि शारिपुत्र तत्र बुद्धक्षेत्रे निर-

སེམས་པ་ལྟར་དེ་ལྟར་མི་བལྟའོ། ། དེ་ཅིའི་ཕྱིར་ཞེ་ན། ཤཱ་རིའི་བུ་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཞིང་དེ་ན་སེམས་ཅན་དམྱལ་བ་དང་། དུད་

所以者何　　彼佛國土無三惡道舍利弗其佛

① "སུ་གྱུར་པ" 以下至次頁第一行 "འགྲོའི་སྐྱེ་གནས" 一段池田部分不闕今據[illegible]此字無字版補

याणां नास्ति तिर्यग्योनीनां यमलोकस्य नास्ति । ते पुनः पक्षिसंघास्

འགྲོའི་སྐྱེ་གནས་དང་། གཤིན་རྗེའི་འཇིག་རྟེན་དུ་སྐྱེ་བའི་མིང་ཡང་མེད་དོ།། བྱའི་ཚོགས་དེ་དག་ནི་དེ་བཞིན་

佛國尚無惡道之名何況有實　　是諸眾鳥皆是阿彌

तेनामितायुषा तथागतेन निर्मिता धर्मशब्दं निश्चारयंति । एवंरूपैः

གཤེགས་པ་ཚེ་དཔག་མེད་དེ་ཉིད་ཀྱིས་ཆོས་ཀྱི་སྒྲ་འབྱུང་བའི་ཕྱིར་སྤྲུལ་པ་དག་གོ། ཀུ་ནཱིའི་སྒྲ་སྒྲངས་

陀佛欲令法音宣流變化所作

शारिपुत्र बुद्धक्षेत्रगुणव्यूहैः समलंकृतं तद्बुद्धक्षेत्रं ॥ ६ ॥

རྒྱལ་ཀྱི་ཞིང་དེ་ན་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཞིང་གི་ཡོན་ཏན་བཀོད་པ་དེ་ལྟ་བུ་དག་གིས་ལེགས་པར་བརྒྱན་པའོ ॥

पुनरपरं शारिपुत्र तत्र बुद्धक्षेत्रे तासां च तालपंक्तीनां तेषां च किंकिणी-

ཤཱ་རིའི་བུ་གཞན་ཡང་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཞིང་དེའི་ཏ་ལའི་ཕྲེང་བ་དེ་དག་དང་། དྲིལ་བུ་གཡེར་ཁའི་དྲ་བ་དེ་དག་ལ་རླུང་

舍利弗彼佛國土微風吹動諸寶行樹及寶羅網出微妙音

जालानां वातेरितानां वल्गुर्मनोज्ञः शब्दो निश्चरति । तद्यथापि नाम

གིས་ཕོག་ཅིང་རླུང་གིས་བསྐྱོད་ན་སྒྲ་སྙན་པ་ཡིད་དུ་འོང་བ། ཉམས་དགའ་བ་འབྱུང་སྟེ། འདི་ལྟ་སྟེ་དཔེར་ན་རོལ་

譬如百千種樂

शारिपुत्र कोटिशतसहस्रांगिकस्य दिव्यस्य तूर्यस्य चार्यैः संप्रवादितस्य

མ་མཁན་གྱིས་ཡན་ལག་བྱེ་བ་འབུམ་དང་ལྡན་པའི་ལྷའི་སིལ་སྙན་བླངས་པ་བཞིན་ནོ ||

同時俱作

वल्गुर्मनोज्ञः शब्दो निश्चरति। एवमेव शारिपुत्र तासां च तालपंक्तीनां

तेषां च किंकिणीजालानां वातेरितानां वल्गुर्मनोज्ञः शब्दो निश्चरति।

तत्र तेषां मनुष्याणां तं शब्दं श्रुत्वा बुद्धानुस्मृतिः काये संतिष्ठति धर्मा-

དེར་མི་དེ་དག་གིས་སྒྲ་དེ་ཐོས་ནས་སངས་རྒྱས་རྗེས་སུ་དྲན་པ་དང་། ཆོས་རྗེས་སུ་དྲན་པ་དང་།

聞是音者自然皆生念佛念法念僧之心

नुस्मृतिः काये संतिष्ठति संघानुस्मृतिः काये संतिष्ठति। एवंरूपैः

དགེ་འདུན་རྗེས་སུ་དྲན་པ་ལུས་ལ་གནས་སོ།།

ཤཱ་རིའི་བུ་སངས་

舍利弗

शारिपुत्र बुद्धक्षेत्रगुणव्यूहैः समलंकृतं तद्बुद्धक्षेत्रं ॥ ७ ॥

རྒྱས་ཀྱི་ཞིང་དེ་ནི་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཞིང་གི་ཡོན་ཏན་བཀོད་པའི་རྒྱན་རྣམ་པ་དེ་ལྟ་བུ་དག་གིས་ལེགས་པར་བརྒྱན་པའོ ॥

其佛國土成就如是功德莊嚴

तत्किं मन्यसे शारिपुत्र केन कारणेन स तथागतोऽमितायुर्नामोच्यते ।

① ཤཱ་རིའི་བུ་འདི་ཇི་སྙམ་དུ་སེམས། དེའི་ཕྱིར་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཚེ་དཔག་ཏུ་མེད་ཅེས་བྱ་ཞེ་ན།

(一) 舍利弗於汝意云何彼佛何故號阿彌陀 舍利弗彼

①② 梵本八九兩段藏譯係譯初為彼參梵本不符今但錄而譯引梵本下來說明令也

तस्य खलु पुनः शारिपुत्र तथागतस्य तेषां च मनुष्याणाममपरिमितमायुः

ཤཱ་རིའི་བུ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཚེ་དཔག་མེད་དེའི་ཚེའི་ཚད་དཔག་ཏུ་མེད་དེ།

佛光明無量照十方國無所障礙是故號

प्रमाणं। तेन कारणेन स तथागतोऽमितायुर्नामोच्यते। तस्य च शारि-

དེའི་ཕྱིར་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཚེ་དཔག་མེད་ཅེས་བྱའོ།། ཤཱ་རིའི་བུ་གཞན་

為阿弥陀又舍利佛彼佛壽命及其

पुत्र तथागतस्य दश कल्पा अनुत्तरां सम्यक्संबोधिमभिसंबुद्धस्य ॥८॥

ཡང་ཅིའི་ཕྱིར་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དེ་འོད་དཔག་མེད་ཅེས་བྱ་ཞེ་ན། ཤཱ་རིའི་བུ་དེ་བཞིན་གཤེགས་

人 民 無 量 無 邊 阿 僧 祇 劫 故 名 阿 彌 陀

तत्किं मन्यसे शारिपुत्र केन कारणेन स तथागतोऽमिताभो नामोच्यते।

པ་འོད་དཔག་མེད་དེའི་འོད་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཞིང་ཐམས་ཅད་དུ་ཐོགས་པ་མེད་དེ། དེའི་ཕྱིར་དེ་བཞིན་

舍 利 弗 阿 彌 陀 佛 成 佛 以 來 於 今 十 劫

तस्य खलु पुनः शारिपुत्र तथागतस्याभाप्रतिहता सर्वबुद्धक्षेत्रेषु । तेन

ག་ཤེགས་པ་འོད་དཔག་མེད་ཅེས་བྱའོ།། བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་འོད་དཔག

又舍利弗彼佛有無量無邊聲聞弟子皆

कारणेन स तथागतोऽमिताभो नामोच्यते ॥ तस्य च शारिपुत्र तथागत-

མེད་དེ་ལྷ་ན་མེད་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་མངོན་པར་རྫོགས་པར་སངས་རྒྱས་ནས་

阿羅漢非是算數之所能知諸菩薩眾亦

स्याप्रमेयः श्रावकसंघो येषां न सुकरं प्रमाणमाख्यातुं शुद्धानामर्हतां ।

བསྐལ་པ་བ་བཅུ་ཡོད་དོ།། ཤཱ་རིའི་བུ་གཞན་ཡང་བཅོམ་ལྡན་འདས་དེའི་ཉན་ཐོས་ཀྱི་དགེ་འདུན་དག་པ་དགྲ་བཅོམ

復 如 是 舍 利 弗 彼 佛 國 土 成 就 如

एवंरूपैः शारिपुत्र बुद्धक्षेत्रगुणव्यूहैः समलंकृतं तद्बुद्धक्षेत्रं ॥ ९ ॥

པ་ལ་སྩོགས་ཚད་མེད་དེ། དེ་དག་གི་ཚད་བརྗོད་པར་སླ་བ་མ་ཡིན་ནོ ||

是 功 德 莊 嚴

पुनरपरं शारिपुत्र ये ऽमितायुषस्तथागतस्य बुद्धक्षेत्रे सत्वा उपपन्नाः शुद्धा

།ཤཱ་རིའི་བུ་གཞན་ཡང་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཞིང་དེར་སྐྱེས་པའི་སེམས་ཅན་དག་ནི་ཕྱིར་མི་ལྡོག་པ། སྐྱེ་བ་གཅིག་གིས་ཐོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་དག་པ་

又舍利弗極樂國土眾生生者皆是阿鞞跋致其中多有一生

बोधिसत्वा अविनिवर्तनीया एकजातिप्रतिबद्धास्तेषा शारिपुत्र बोधिसत्वानां

ཡི་གྲངས་མེད་དོ། །ཤཱ་རིའི་བུ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་དེ་དག་གི་ཚད་ནི་བརྗོད་པར་སླ་བ་མ་ཡིན་ཏེ། གཞན་དུ་ན་ཚད་མེད་གྲངས་མེད་ཅེས་བྱ་བའི་གྲངས་སུ······

補處　　　　　　　　　　其數甚多非是算數

न सुकरं प्रमाणमाख्यातुमन्यत्राप्रमेयासंख्येया इति संख्यां गच्छंति ॥

འགྲོའོ། །ཤཱ་རིའི་བུ་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཞིང་དེ་ནི་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཞིང་གི་ཡོན་ཏན་བཀོད་པ་རྣམ་པ་དེ་ལྟ་བུ་དག་གིས་ལེགས་པར་བརྒྱན་པའོ། །

所能知之但可以無量無邊阿僧祇說

तत्र खलु पुनः शारिपुत्र बुद्धक्षेत्रे सत्वैः प्रणिधानं कर्तव्यं । तत्कस्माद्धेतोः ।

ཤཱ་རིའི་བུ་དེ་ལྟ་བས་ན་རིགས་ཀྱི་བུའམ་རིགས་ཀྱི་བུ་མོས་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཞིང་དེར་སྐྱེ་བར་བྱ་བའི་ཕྱིར་དགེ་བའི་རྩ་བ་རྣམས་གུས་པས་ཡོངས

舍利弗衆生聞者應當發願願生彼國　所以者何

यत्र हि नाम तथारूपैः सत्पुरुषैः सह समवधानं भवति । नावरमात्रकेण

སུ་བསྒྲོ་བར་ནུའོ། །དེ་ཅིའི་ཕྱིར་ཞེ་ན། །འདི་ལྟར་སྐྱེས་བུ་དམ་པ་དེ་ལྟ་བུ་དག་དང་འཕྲད་པར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་རོ། ། ཤཱ་རིའི་བུ་དགེ་བའི་རྩ་བ་

得與如是諸上善人俱會一處　　　　舍利弗不可

शारिपुत्र कुशलमूलेनामितायुषस्तथागतस्य बुद्धक्षेत्रे सत्वा उपपद्यंते । यः

ངན་ངོན་ཙམ་གྱིས་ནི་བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཚེ་དཔག་མེད་དེའི་ཞིང་དུ་སྐྱེ་བར་མི་འགྱུར་རོ། ། ཤཱ་རིའི་བུ་

以少善根福德因緣得生彼國　　　　舍

कश्चिच्छारिपुत्र कुलपुत्रो वा कुलदुहिता वा तस्य भगवतोऽमितायुषस्

རིགས་ཀྱི་བུའམ་རིགས་ཀྱི་བུ་མོ་གང་གིས་བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཚེ་དཔག་མེད་དེའི་མཚན་ཐོས་...

利子若有善男子善女人聞說阿彌陀佛執持名號

तथागतस्य नामधेयं श्रोष्यति श्रुत्वा च मनसिकरिष्यति एकरात्रं

ནས་ཀྱང་ཡིད་ལ་བྱེད་ཅིང་ཉིན་གཅིག་གམ། ཉིན་གཉིས་སམ། ཉིན་གསུམ་མམ། ཉིན་བཞིའམ། ཉིན་...

若一日

वा द्विरात्रं वा त्रिरात्रं वा चतूरात्रं वा पंचरात्रं वा षड्रात्रं वा सप्तरात्रं

ལྔའམ། ཉུབ་ཉུག་གམ། ཉུབ་བདུན་དུ་གཡེང་བ་མེད་པའི་སེམས་ཀྱིས་ཡིད་ལ་བྱེད་ན།

若二日　若三日　若四日　若五日　若六日　若七日

वाविक्षिप्तचित्तो मनसिकरिष्यति यदा स कुलपुत्रो वा कुलदुहिता वा काल

རིགས་ཀྱི་བུའམ་རིགས་ཀྱི་བུ་མོ་དེ་འཆི་བའི་དུས་ཀྱི་ཚེ་ཕྱིན་ཅི

一心不亂　其人臨命終時

करिष्यति तस्य कालं कुर्वतः सो ऽमितायुस्तथागतः श्रावकसंघपरिवृतो

ལོག་མེད་པའི་སེམས་ཀྱིས་འཆི་བའི་དུས་བྱས་དུས་འཆི་བའི་དུས་བྱས་པ་དེ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཚེ་དཔག

阿弥陀佛與諸聖衆現在其前

बोधिसत्वगणपुरस्कृतः पुरतः स्थास्यति सो ऽविपर्यस्तचित्तः कालं करि

མེད་ཉན་ཐོས་ཀྱི་དགེ་འདུན་གྱིས་ཡོངས་སུ་བསྐོར་ཞིང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་ཚོགས་ཀྱིས་མདུན་གྱིས་བསྐུས

是人終時心不顛倒

① [illegible]

ष्यति च। स कालं कृत्वा तस्यैवामितायुषस्तथागतस्य बुद्धक्षेत्रे सुखा

པའི་ མདྷ་ཀཱ་ལ་བཞུགས་པ་བཅོམ་ལྡན་འདས་ དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་འོད་དཔག་མེད་དེའི་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཞིང་འཇིག

即得往生阿弥陀佛極樂國土

वत्यां लोकधातावुपपत्स्यते। तस्मात्तर्हि शारिपुत्र इदमर्थवशं संपश्य·

རྟེན་གྱི་ཁམས་བདེ་བ་ཅན་དུ་སྐྱེ་བར་འགྱུར་རོ།། ཤཱ་རིའི་བུ་དེ་ལྟ་བས་ན་དོན་གྱི་དབང་དུ་མཐོང་ནས་རིགས་ཀྱི་བུའམ

舍利弗我見是利故說此言

मान् एवं वदामि सत्कृत्य कुलपुत्रेण वा कुलदुहित्रा वा तत्र बुद्धक्षेत्रे

རིགས་ཀྱི་བུ་མོས་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཞིང་དེར་གུས་པར་སྨོན་ལམ་གདབ་པར་བྱའོ་ཞེས་ང་སྨྲས་ཅེས་བརྗོད

若有衆生聞是說者應當發願生

चित्तप्रणिधानं कर्तव्यं ॥१०॥

དོ།།

彼國土

तद्यथापि नाम शारिपुत्र अहमेतर्हि तां परिकीर्तयामि एवमेव शारिपुत्र

ཤཱ་རིའི་བུ་ཇི་ལྟར་ང་དེ་བཞིན་པ། དེ་ཀ་ལ་པ་ར་ས་ཇི་ལྟར་ཡོངས་སུ་བརྗོད་པ་དེ་བཞིན་དུ། ཤཱ་རིའི་བུ་ཤར་ཕྱོགས་ན་བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་མི་འཁྲུགས་

舍利弗如我今者讚歎阿彌陀佛不可思議功德之利

पूर्वस्यां दिश्यक्षोभ्यो नाम तथागतो मेरुध्वजो नाम तथागतो महामेरु-

པ་ཞེས་བྱ་བ་དང་། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ལྷུན་པོའི་རྒྱལ་མཚན་ཞེས་བྱ་བ་དང་། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ལྷུན་པོ་ཆེ་ཞེས་བྱ་བ་དང་། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ལྷུན་པོ་ཆེན་པོ་ཞེས་

東方亦有阿閦鞞佛 須彌相佛 大須彌佛

नाम तथागतो मेरुप्रभासो नाम तथागतो मंजुध्वजो नाम तथागत

སྒྲུབ་དང་། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ལྷུན་པོ་ཆེན་པོ་སྣང་བ་ཞེས་བྱ་བ་དང་། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་འཇམ་སྒྲ་ཞེས་བྱ་བ་དང་། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་འཇམ་དབྱངས་ཞེས་བྱ་བ་དང་།

須弥光佛　　　　妙音佛

एवंप्रमुखाः शारिपुत्र पूर्वस्यां दिशि गंगानदीवालुकोपमा बुद्धा भग-

དེ་དག་ལ་སོགས་པ་ཤར་ཕྱོགས་ཀྱི་སངས་རྒྱས་བཅོམ་ལྡན་འདས་གངྒཱའི་ཀླུང་གི་བྱེ་མ་སྙེད་དག་རང་རང་གི་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཞིང་རྣམས་

如是等恒河沙數諸佛

वंतः स्वकस्वकानि बुद्धक्षेत्राणि जिह्वेंद्रियेण संच्छादयित्वा निर्वेठनं

ལྗགས་ཀྱི་དབང་པོས་ཁེབས་པར་མཛད་དེ། ཁྱེད་ཅག་ཡོན་ཏན་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པ་ཡོངས་སུ་བརྗོད་པ་སངས་རྒྱས་

各於其國出廣長舌相徧覆三千大千世界說誠實言

कुर्वंति । प्रतीयथ यूयमिदमचिंत्यगुणपरिकीर्तनं सर्वबुद्धपरिग्रहं नाम

ཐམས་ཅད་ཀྱིས་ཡོངས་སུ་བཟུང་བའི་ཆོས་ཀྱི་རྣམ་གྲངས་འདི་ལ་ཡིད་ཆེས་པར་གྱིས་ཤིག་ཅེས་གསུང་ང་

汝等眾生當信是稱讚不可思議功德一切諸佛所護念

धर्मपर्यायं ॥११॥

མཛད་དོ ॥

经

एवं दक्षिणस्यां दिशि चंद्रसूर्यप्रदीपो नाम तथागतो यशःप्रभो नामं

དེ་བཞིན་དུ་ལྷོ་ཕྱོགས་ན་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཉི་ཟླའི་སྒྲོན་མ་ཞེས་བྱ་བ་དང་། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་གྲགས་པའི་འོད་ཅེས་བྱ་བ་དང་། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་གྲགས་

舍利弗南方世界有日月燈佛　　名聞光佛

तथागतो महार्चिस्कंध नाम तथागतो मेरुप्रदीपो नाम तथागतो

པའི་འོད་ཅེས་བྱ་བ་དང་། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་འོད་འཕྲོ་ཕུང་པོ་ཞེས་བྱ་བ་དང་། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ལྷུན་པོའི་སྒྲོན་མ་ཞེས་བྱ་བ་དང་། དེ་བཞིན་

大燄肩佛　　　　　　　　須弥燈佛

ऽनंतवीर्यो नाम तथागत एवंप्रमुखाः शारिपुत्र दक्षिणस्यां दिशि गंगा

གཤེགས་པ་བརྩོན་འགྲུས་མཐའ་ཡས་ཞེས་བྱ་བ་དང་། དེ་དག་ལ་སོགས་པ་ལྷོ་ཕྱོགས་ཀྱི་སངས་རྒྱས་བཅོམ་ལྡན་འདས་གངྒཱའི་ཀླུང་གི
།

無量精進佛　　　　如是等恒河沙數諸佛

नदीवालुकोपमा बुद्धा भगवतः स्वकस्वकानि बुद्धक्षेत्राणि जिह्वेन्द्रियेण

ཀླུ་མ་སྐྱེད་དག་རང་རང་གི་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཞིང་རྣམས་ལྗགས་ཀྱི་དབང་པོས་ཁྱབས་པར་མཛད་དེ། ཁྱེད་ཅག་ཡིད་ཧན་

各於其國出廣長舌相徧覆三千大

सञ्छादयित्वा निर्वेठनं कुर्वंति। प्रतीयथ यूयमिदमचिंत्यगुणपरिकीर्तनं

བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པ་ཡོངས་སུ་བརྗོད་པ་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་ཡོངས་སུ་བཟུང་བའི་ཆོས་ཀྱི་རྣམ་གྲངས་འདི་ལ་ཡིད་

千世界說誠實言

汝等眾生當信是稱讚不可思議功

सर्वबुद्धपरिग्रहं नाम धर्मपर्यायं ॥ १२ ॥

ཆེས་པར་གྱིས་ཤིག་ཅེས་གསུང་པ་མཛད་དོ ॥

德一切諸佛所護念經

एवं पश्चिमायां दिश्यमितायुर्नाम तथागतो ऽमितस्कंधो नाम तथागतो

དེ་བཞིན་དུ་ནུབ་ཕྱོགས་ན་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཚེ་དཔག་མེད་ཅེས་བྱ་བ་དང་། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཕུང་པོ་དཔག་མེད་ཅེས་བྱ་བ་དང་། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་རྒྱལ

舍利弗西方世界有無量壽佛 無量相佛

ऽमितध्वजो नाम तथागतो महाप्रभो नाम तथागतो महारत्नकेतुर्नाम

མཚན་དཔག་མེད་ཅེས་བྱ་བ་དང་། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་འོད་ཆེན་ཞེས་བྱ་བ་དང་། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་འོད་ཟེར་སྣང་བ་ཞེས་བྱ་བ་དང་། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་

無量幢佛 大光佛 大明佛 寶相佛

तथागतः शुद्धरश्मिप्रभो नाम तथागत एवंप्रमुखाः शारिपुत्र पश्चिमायां

རིན་པོ་ཆེའི་ཏོག་ཅེས་བྱ་བ་དང་། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་འོད་ཟེར་དག་པ་ཞེས་བྱ་བ་དང་། དེ་དག་ལ་སོགས་པ་ནུ་བ་ཕྱོགས་ཀྱི་སངས་རྒྱས་བཅོམ་

淨光佛 如是等恒河沙數諸佛

दिशि गंगानदीवालुकोपमा बुद्धा भगवंत स्वकस्वकानि बुद्धक्षेत्राणि

ལྷུན་འདས་ཀ་གངྒཱའི་ཀླུང་གི་བྱེ་མ་སྙེད་དག་རང་རང་གི་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཞིང་རྣམས་ལྗགས་ཀྱི་དབང་པོས་ཁེབས་པར་མཛད་དེ།

各於其國出廣長舌相徧

जिह्वेंद्रियेण संच्छादयित्वा निर्वेठनं कुर्वंति। प्रतीयथ यूयमिदमचिंत्य-

ཁྱེད་ཅག་ཡོན་ཏན་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པ་ཡོངས་སུ་བརྗོད་པ་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་ཡོངས་སུ་བཟུང་བའི་ཆོས་ཀྱི་

覆三千大千世界說誠實言 汝等衆生當信是稱讚

गुणपरिकीर्तनं सर्वबुद्धपरिग्रहं नाम धर्मपर्यायं ॥१३॥

རྣམ་གྲངས་འདི་ལ་ཡིད་ཆེས་པར་གྱིས་ཤིག་ཅེས་གསུང་པ་མཛད་དོ ॥

不可思議功德一切諸佛所護念經

एवमुत्तरायां दिशि महार्चिस्कंधो नाम तथागतो वैश्वानरनिर्घोषो नाम

དེ་བཞིན་དུ་བྱང་ཕྱོགས་ན་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་འོད་འཕྲོའི་ཕུང་པོ་ཆེན་པོ་ཞེས་བྱ་བ་དང་། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་སྒྲོལ་

舍利弗北方世界有大燄肩佛　　　　最勝音佛

तथागतो दुंदुभिस्वरनिर्घोषो नाम तथागतो दुष्प्रधर्षो नाम तथागत

བའི་དབྱངས་ཞེས་བྱ་བ་དང་། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་རབ་ཏུ་ཐུབ་དཀའ་ཞེས་བྱ་བ་དང་། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཉི་མ་འབྱུང་ཞེས་བྱ་བ་དང་།

難沮佛

आदित्यसंभवो नाम तथागतो जलेनिप्रभो नाम तथागतः प्रभाकरो नाम

དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དྲ་བ་ཅན་གྱི་འོད་ཅེས་བྱ་བ་དང་། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་འོད་ཀྱི་འབྱུང་གནས་ཞེས་བྱ་བ་དང་།

日生佛　　網明佛

तथागत एवंप्रमुखाः शारिपुत्रोत्तरायां दिशि गंगानदीवालुकोपमा बुद्धा

དེ་དག་ལ་སོགས་པ་བྱང་ཕྱོགས་ཀྱི་སངས་རྒྱས་བཅོམ་ལྡན་འདས་གང་གཱའི་ཀླུང་གི་བྱེ་མ་སྙེད་དག་རང་རང་གི་

如是等恒河沙數諸佛

भगवंतः स्वकस्वकानि बुद्धक्षेत्राणि जिह्वेंद्रियेण संच्छादयित्वा निर्वेठन

སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཞིང་རྣམས་ལྗགས་ཀྱི་དབང་པོས་ཁེབས་པར་མཛད་དེ། ཁྱེད་ཅག་ཡོན་ཏན་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པ་ཡོངས་

各於其國出廣長舌相徧覆三千大千世界說誠實言

कुर्वंति । प्रतीयथ यूयमिदमचिंत्यगुणपरिकीर्तनं सर्वबुद्धपरिग्रहं

སུ་བརྗོད་པ་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་ཡོངས་སུ་བཟུང་བའི་ཆོས་ཀྱི་རྣམ་གྲངས་འདི་ལ་ཡིད་ཆེས་པར་གྱིས་ཤིག

汝等衆生當信是稱讚不可思議功德一切諸佛所護念

नाम धर्मपर्यायं ॥१४॥

ཆེས་གསུང་པ་མཛད་དོ།།

經

एवमधस्तायां दिशि सिंहो नाम तथागतो यशो नाम तथागतो यशः-

དེ་བཞིན་དུ་འོག་གི་ཕྱོགས་ན་ དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་སེང་གེ་ཞེས་བྱ་བ་དང་། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་གྲགས་པ་ཞེས་བྱ་བ་དང་། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་

舍利子下方世界有師子佛 名聞佛 名

प्रभासो नाम तथागतो धर्मो नाम तथागतो धर्मधरो नाम तथा-

གྲགས་འོད་ཟེར་ཅེས་བྱ་བ་དང་། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཆོས་ཞེས་བྱ་བ་དང་། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཆོས་འཛིན་ཞེས་བྱ་བ་དང་། དེ་

光佛 達磨佛 法幢佛

गतो धर्मध्वजो नाम तथागत एवंप्रमुखाः शारिपुत्राधस्तायां दिशि

བཞིན་གཤེགས་པ་ཆོས་ཀྱི་རྒྱལ་མཚན་ཞེས་བྱ་བ་དང་། དེ་དག་ལ་སོགས་པ་འོག་གི་ཕྱོགས་ཀྱི་སངས་རྒྱས་བཅོམ་ལྡན་འདས་

持法佛　　　　如是等恒河沙數諸佛

गंगानदीवालुकोपमा बुद्धा भगवंतः स्वकस्वकानि बुद्धक्षेत्राणि

གངྒཱའི་ཀླུང་གི་བྱེ་མ་སྙེད་དག་རང་རང་གི་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཞིང་རྣམས་ལྗགས་ཀྱི་དབང་པོས་ཁེབས་པར་མཛད་དེ། ཁྱེད་

各於其國出廣長舌相徧覆

जिह्वेंद्रियेण संच्छादयित्वा निर्वेठनं कुर्वंति। प्रतीयथ यूयमिदमचिंत्य-

ཅག་ཡིད་ཏན་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པ་ཡོངས་སུ་བརྗོད་པ་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་ཡོངས་སུ་བཟུང་བའི་ཆོས་ཀྱི་

三千大千世界說誠實言　　汝等衆生當信是稱讚

गुणपरिकीर्तनं सर्वबुद्धपरिग्रहं नाम धर्मपर्यायं ॥१५॥

རྣམ་གྲངས་འདི་ལ་ཡིད་ཆེས་པར་གྱིས་ཞིག་ཅེས་གསུང་པ་མཛད་དོ ॥

不可思議功德一切諸佛所護念經

एवमुपरिष्ठायां दिशि ब्रह्मघोषो नाम तथागतो नक्षत्रराजो नाम त-

དེ་བཞིན་དུ་སྟེང་གི་ཕྱོགས་ན་ དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཚངས་པའི་དབྱངས་ཞེས་བྱ་བ་དང་། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་སྐར་མའི་རྒྱལ་པོ་

如是上方世界有梵音佛　　　　宿王佛

थागत इंद्रकेतुध्वजराजो नाम तथागतो गंधोत्तमो नाम तथागतो

ཞེས་བྱ་བ་དང་།　　　　དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་སྤོས་མཆོག་ཅེས་བྱ་བ་དང་།

香上佛

गंधप्रभासो नाम: तथागतो महार्चिस्कंधो नाम तथागता रत्नकुसुम-

དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་སྤོས་འོད་ཅེས་བྱ་བ་དང་། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་སྤོས་ཀྱི་ཕུང་པོ་ཞེས་བྱ་བ་དང་། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་རིན་

香光佛　　　　大鉄肩佛　　　　雜色寶華

संपुष्पितगात्रो नाम तथागतः सालेंद्रराजो नाम तथागतो रत्नोत्पल-

ཆེན་མེ་ཏོག་ཤིན་ཏུ་རྒྱས་པའི་སྐུ་ལུས་ཞེས་བྱ་བ་དང་། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་སཱ་ལའི་དབང་པོའི་རྒྱལ་པོ་ཞེས་བྱ་བ་དང་། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་

嚴*身佛　　　　娑羅樹王佛　　　　寶華德

श्रीर्नाम तथागतः सर्वार्थदर्शो नाम तथागतः सुमेरुकल्पो नाम तथा-

རིན་ཆེན་ཨུ་ཏྤ་ལའི་དཔལ་ཞེས་བྱ་བ་དང་། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་མཐོང་བ་དོན་ཡོད་ཅེས་བྱ་བ་དང་། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་རི་རབ་ལྟ་བུ་ཞེས་བྱ་བ

佛　　　見一切義佛　　　如須彌山佛

गत एवप्रमुखाः शारिपुत्रोपरिष्ठायां दिशि गंगानदीवालुकोपमा बुद्धा

དང་། དེ་དག་ལ་སོགས་པ་སྟེང་གི་ཕྱོགས་ཀྱི་སངས་རྒྱས་བཅོམ་ལྡན་འདས་གངྒཱའི་ཀླུང་གི་བྱེ་མ་སྙེད་དག་རང་རང་གི་སངས་

如是等恒河沙數諸佛

भगवंतः स्वकस्वकानि बुद्धक्षेत्राणि जिह्वेंद्रियेण संच्छादयित्वा निर्वेठनं

རྒྱས་ཀྱི་ཞིང་རྣམས་ལྗགས་ཀྱི་དབང་པོས་ཁེབས་པར་མཛད་དེ། ཁྱེད་ཅག་ཡོན་ཏན་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པ་ཡོངས་སུ་

各於其國出廣長舌相徧覆三千大千世界說誠實言

कुर्वंति । प्रतीयथ यूयमिदमचिंत्यगुणपरिकीर्तनं सर्वबुद्धपरिग्रहं

བརྗོད་པ་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་ཡོངས་སུ་བཟུང་བའི་ཆོས་ཀྱི་རྣམ་གྲངས་འདི་ལ་ཡིད་ཆེས་པར་གྱིས་ཤིག་ཅེས་

汝等衆生當信是稱讚不可思議功德一切諸佛所護

◎ 佛說阿彌陀經

नाम धर्मपर्यायं ॥१६॥

གསུང་བ་མཛད་དོ།།

念經

तत्किं मन्यसे शारिपुत्र केन कारणेनायं धर्मपर्यायः सर्वबुद्धपरिग्रहो

ཤཱ་རིའི་བུ་འདི་ཇི་སྙམ་དུ་སེམས། ཅིའི་ཕྱིར་ཆོས་ཀྱི་རྣམ་གྲངས་འདི་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་ཡོངས་སུ་བཟུང་བ་ཞེས་བྱ་

舍利弗於汝意云何何故名為一切諸佛所護念經

नामोच्यते। ये केचिच्छारिपुत्र कुलपुत्रा वा कुलदुहितरो वास्य धर्मप-

ཞེ་ན། ཤཱ་རིའི་བུ་རིགས་ཀྱི་བུའམ་རིགས་ཀྱི་བུ་མོ་གང་དག་ཆོས་ཀྱི་རྣམ་གྲངས་འདི་དང་། སངས་

舍利弗若有善男子善女人聞是經受持者及聞諸佛名

र्यायस्य नामधेयं श्रोष्यंति तेषां च बुद्धानां भगवतां नामधेयं धारयिष्यं-

རྒྱས་བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་དག་གི་མཚན་ཐོས་པར་གྱུར་པ་དང་། ཐོས་པ་དང་ཐོས་པར་འགྱུར་བ་དེ་དག

者

ति सर्वे ते बुद्धपरिगृहीता भविष्यंत्यविनिवर्तनीयाश्च भविष्यंत्यनुत्तरायां

ཐམས་ཅད་སངས་རྒྱས་བཅོམ་ལྡན་འདས་རྣམས་ཀྱིས་ཡོངས་སུ་བཟུང་བར་འགྱུར་རོ། །

是諸善男子善女人皆為一切諸佛之所護念皆得不退轉於阿耨

सम्यक्संबोधौ। तस्मात्तर्हि शारिपुत्र श्रद्दधाध्वं प्रतीयथ माकाङ्क्षयथ

多羅三藐三菩提 是故舍利弗汝等皆當信受我語及諸佛所說

मम च तेषां च बुद्धानां भगवतां। ये केचिच्छारिपुत्र कुलपुत्रा वा कुल-

ཤཱ་རིའི་བུ་སེམས་ཅན་གང་དག་བཅོམ་ལྡན་འདས་

舍利弗若有人已發願今發願當發

दुहितरो वा तस्य भगवतोऽमितायुषस्तथागतस्य बुद्धक्षेत्रे चित्तप्रणिधानं

དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་འོད་དཔག་མེད་དེའི་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཞིང་འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་བདེ་བ་ཅན་དུ

願欲生阿彌陀佛國者

कारिष्यंति कृत वा कुर्वंति वा सर्वे तेऽविनिवर्तनीया भविष्यंत्यनुत्तराया

སེམས་ཀྱིས་སྨོན་ལམ་བྱེད་པའམ། བྱས་པའམ། བྱེད་པར་འགྱུར་བ་དེ་དག་ཐམས་ཅད་བླ་ན་མེད་པ་ཡང་

是諸人等皆得不退轉於阿耨多羅三

सम्यक्संबोधौ तत्र च बुद्धक्षेत्र उपपत्स्यंत्युपपन्ना वोपपद्यंति वा । तस्मा-

དག་པར་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་ལས་ཕྱིར་མི་ལྡོག་པོ། ཕྱིར་མི་ལྡོག་པོ། ཕྱིར་མི་ལྡོག་པར་འགྱུར་རོ། །

藐三菩提於彼國土若已生若今生若當生 是故

तर्हि शारिपुत्र श्राद्धैः कुलपुत्रैः कुलदुहितृभिश्च तत्र बुद्धक्षेत्रे चित्तप्रणि

舍利弗諸善男子善女人若有信者應當發願生彼國土

धिरुत्पादयितव्यः ॥ १७ ॥

तद्यथापि नाम शारिपुत्राहमेतर्हि तेषां बुद्धानां भगवतामेवमचिंत्यगुणा-

ཤཱ་རིའི་བུ་ཇི་ལྟར་ང་ད་ལྟར་སངས་རྒྱས་བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་དག་གི་ཡོན་ཏན་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པ་ཡོངས་སུ་བརྗོད་པ་

舍利弗如我今者稱讚諸佛不可思議功德

न्परिकीर्तयामि एवमेव शारिपुत्र ममापि ते बुद्धा भगवंत एवमचिंत्यगुणा-

དེ་བཞིན་དུ། ཤཱ་རིའི་བུ་སངས་རྒྱས་བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་དག་ཀྱང་ངའི་ཡོན་ཏན་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པ་ཡོངས་སུ

彼諸佛等亦稱讚我不可思議功德而作是言

न्परिकीर्तयंति। सुदुष्करं भगवता शाक्यमुनिना शाक्याधिराजेन कृतं।

བརྗོད་དོ༎ ཤཱ་རིའི་བུ་གསོལ་བ། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཤཱ་ཀྱ་ཐུབ་པ། ཤཱ་ཀྱའི་རྒྱལ་པོས་བསྐལ་པའི་སྙིགས་མ་དང་།

釋迦牟尼佛能為甚難希有之事

सहायां लोकधातावनुत्तरां सम्यक्सम्बोधिमभिसंबुध्य सर्वलोकविप्रत्ययनीयो

ཉོན་མོངས་པའི་སྙིགས་མ་དང་། སེམས་ཅན་གྱི་སྙིགས་མ་དང་། ལྟ་བའི་སྙིགས་མ་དང་། ཚེའི་སྙིགས་མའི་ཚེ་འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་མི་མཇེད་དུ

能於娑婆國土五濁惡世劫濁見濁煩惱濁眾生濁命濁中得阿耨多

धर्मो देशितः कल्पकषाये सत्वकषाये दृष्टिकषाय आयुष्कषाये

བླ་ན་མེད་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་མངོན་པར་རྫོགས་པར་སངས་རྒྱས་ཏེ། འཇིག་རྟེན་ཐམས་ཅད་དང་མི་མཐུན་པའི་ཆོས་བསྟན་

羅三藐三菩提 為諸衆生説是一切世間難信之法

क्लेशकषाये ...॥ १८ ॥

པའི་ངོ་མཚར་ལགས་སོ ||

तन्ममापि शारिपुत्र परमदुष्करं यन्मया सहायां लोकधातावनुत्तरां

བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་བཀའ་སྩལ་པ། ཤཱ་རིའི་བུ་སྙིགས་མ་ལྔའི་ཚེ་འཇིག་རྟེན་དུ་ངས་ཀྱང་འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་མི་མཇེད་

舍利弗當知我於五濁惡世行此難事得阿耨多羅三藐三菩提為

सम्यक्संबोधिमभिसंबुध्य सर्वलोकविप्रत्ययनीयो धर्मो देशितः सत्त्वकषाये

དུ་བླ་ན་མེད་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་མངོན་པར་རྫོགས་པར་སངས་རྒྱས་ཏེ། འཇིག་རྟེན་ཐམས་ཅད་དང་མི་མཐུན་པའི

一切世間說此難信之法是為甚難

दृष्टिकषाये क्लेशकषाय आयुष्कषाये कल्पकषाये ॥१९॥

ཆོས་བསྙིགས་པ་དེ་ནི་མཆོག་ཏུ་དཀའ་བ་ཉིད་པའོ ॥

इदमवोचद्भगवानात्तमनाः। आयुष्माञ्शारिपुत्रस्ते च भिक्षवस्ते च बोधि

བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་དེ་སྐད་ཅེས་བཀའ་སྩལ་ནས། ཚེ་དང་ལྡན་པ་ཤཱ་རིའི་བུ་དང་། ཉན་ཐོས་ཆེན་པོ་དེ་དག་དང་། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་དེ་དག་དང་།

佛說此經已　　　　舍利弗及諸比丘一切世間天人阿

सत्वाः सदेवमानुषासुरगंधर्वश्च लोको भगवतो भाषितमभ्यनंदन् ॥२०॥

ལྷ་དང་མི་དང་། ལྷ་མ་ཡིན་དང་། དྲི་ཟ་དང་བཅས་པའི་འཇིག་རྟེན་ཡི་རངས་ཏེ། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་གསུངས་པ་ལ་མངོན་པར་བསྟོད་དོ།།

修羅等聞佛所說歡喜信受作禮而去

॥ सुखावतीव्यूहो नाम महायानसूत्रं ॥ ①

།།འཕགས་པ་བདེ་བ་ཅན་གྱི་བཀོད་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་མདོ་རྫོགས་སོ།། ②

佛說阿彌陀經終 ③

① 梵本用 F. Max Müller 校印本之 Anecdota Oxoniensia (Aryan Series) Vol I part II ② 藏文本係依池田澄達氏新印寫本[illegible]新印北京本字樣校改 ③ 漢譯用鳩摩羅什譯本

中華民國三十二年發行

非賣品

對勘者　王孑農

編訂者　中國佛教學院

印刷者　正華印刷局

發行者　中國佛教學院出版部
北京德勝門內
甘水橋胡同瑞應寺

80

Tafels